पंचायतन यात्रा (प्राचीन लिंगपुराण)

कत्तिवासो मध्यमेश ओङ्काश्च कपर्दिकः।
विश्वेश्वर इति ज्ञेयं पञ्चायतनमुत्तमम।। ९

इस यात्रा में कृत्तिवासेश्वर (वृद्धकाल के दक्षिण), मध्यमेश्वर (मैदागिन के उत्तर), ओंकारेश्वर (ओंकारेश्वर मुहल्ले में), कपर्दीश्वर (पिशाचमोचन पर), और विश्वेश्वर का पूजन होता है। कूर्मपुराण में भी यही पंचायतन कहे गये हैं (त्रि. से. १६७)। ठकृल्यकल्पतरू' में दिये हुए लिंगपुराण के अनुसार ओंकारेश्वर के पाँचों अंगों को भी पंचायतन कहा जाता है तथा उन्हीं का दर्शन-पूजन पंचायन यात्रा होती है, परन्तु उस स्थान पर अब केवल तीन ही मन्दिर बच रहे हैं।

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.